

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 12

मृत्तिका

(नरेश मेहता) (1922 -2000)

भाग – 1

पल्लवी कलिता



नरेश मेहता (1922-2000)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

नरेश मेहता

जन्म :- सन 1922 में मालवा के (मध्य प्रदेश) के शाजापुर कस्बे में हुआ था।

शिक्षा और कर्म जीवन :- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए करने के बाद उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो इलाहाबाद में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में कार्य प्रारंभ किया।

ख्याति का आधार :- नरेश मेहता की ख्याति 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि के रूप में प्रारंभ हुई।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रसिद्धि :- नरेश मेहता को उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'वह पथ बंधु था' के कारण विशेष प्रसिद्धि मिली।

रचनाएँ :- 'बनपाखी सुनो' 'बोलने तो चीड़ को'तथा 'मेरा समर्पित एकांत' प्रसिद्ध काव्य- संग्रह हैं। 'संशय की एक रात' उनका प्रसिद्ध खंडकाव्य है।

रचनाओं के विषय :- नए कवि के रूप में नरेश मेहता की रचनाओं में दो बातें उभरकर सामने आती हैं – मानव और अस्तित्व की खोज तथा आधुनिक संकट से उत्पन्न आशंका और भय की अभिव्यक्ति। मानव के भविष्य के प्रति उनका विश्वास उनकी हर रचना में विद्यमान है।

उनकी रचनाओं में सर्वत्र आधुनिकता का स्वर बोलता है तथा शिल्प और अभिव्यंजना के स्तर पर उनमें ताज़गी और नयापन है।

मृत्यु :- सन 2000 में उनका निधन हो गया।



मृत्तिका

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ -
जब तुम
मुझे पैरों से रौंदते हो
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं -
धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।

मात्र – केवल
मृत्तिका – माटि
विदीर्ण करना – फटा



जब तुम
मुझे हाथों से स्पर्श करते हो
तथा चाक पर चढ़ाकर घुमाने लगते हो
तब मैं -
कुंभ और कलश बनकर
जल लाती तुम्हारी अंतरंग प्रिया हो जाती हूँ।

कुंभ-कलश – कलह
जल लाती- কলহত পানী ভৰাই অনা প্ৰিয়া,
জীৱনত ৰস সঞ্চাৰ কৰোঁতা
अंतरंग– घनिष्ठ, निकटतम



जब तुम मेले में मेरे खिलौने रूप पर
आकर्षित होकर मचलने लगते हो
तब मैं -
तुम्हारे शिशु-हाथों में पहुँच प्रजारूपा हो जाती हूँ।

प्रजारूपा – সন্তানৰ দৰে



पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं -
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ।
(प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्य हो जाती हूँ)

पुरुषार्थ – উদ্যোগ, উদ্যম
ग्राम्य देवत्व - লোক-দেৱতা, গ্ৰামবাসীৰ দেৱতা
स्वत्व से – অধিকাৰ
चिन्मयी शक्ति- ঈশ্বৰৰ ৰূপ, চেতনাময়ী শক্তি

विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है,
कि तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मृत्तिका

कविता सीधे-सरल बिंबों के सहारे पुरुषार्थी मनुष्य और मिट्टी के संबंधों पर प्रकाश डालती है। मनुष्य के पुरुषार्थ के बदलते रूपों के अनुरूप मिट्टी कभी माँ, कभी प्रिया, कभी प्रजा और कभी चिन्मयी शक्ति के रूप में ढल जाती है। पुरुषार्थ मिट्टी को दैवी शक्ति में बदल देता है।

मूल्यांकन



1 | कवि ने स्वयं को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

क माता

ख मृत्तिका (मिट्टी)

ग कृषक

घ बीज

मूल्यांकन



2 | कुंभ और कलश बनकर “मैं” क्या कार्य करती है?

क भोजन पकाती है

ख पूजा कराती है

ग जल लाती है

घ सजावट करती है

मूल्यांकन



3 कविता में "शिशु-हाथों" से किस भाव की अभिव्यक्ति होती है?

क क्रोध

ख भय

ग निष्कलुषता और कोमलता

घ उदासी

मूल्यांकन



4 “प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्य हो जाती हूँ” पंक्ति का आशय क्या है?

क वस्तुकरण

ख कला प्रदर्शन

ग पूजा और श्रद्धा

घ व्यापारिक उपयोग